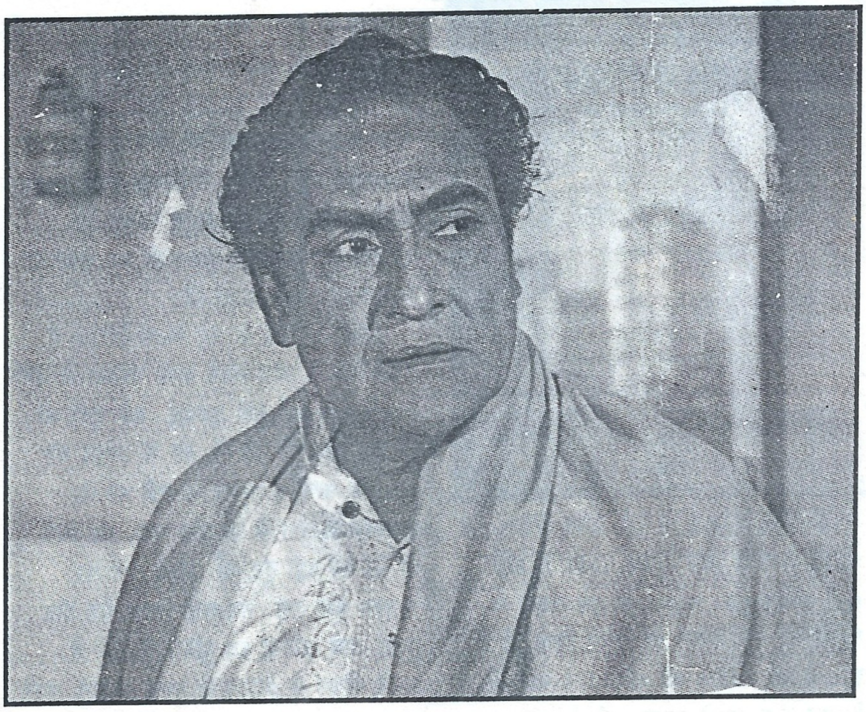


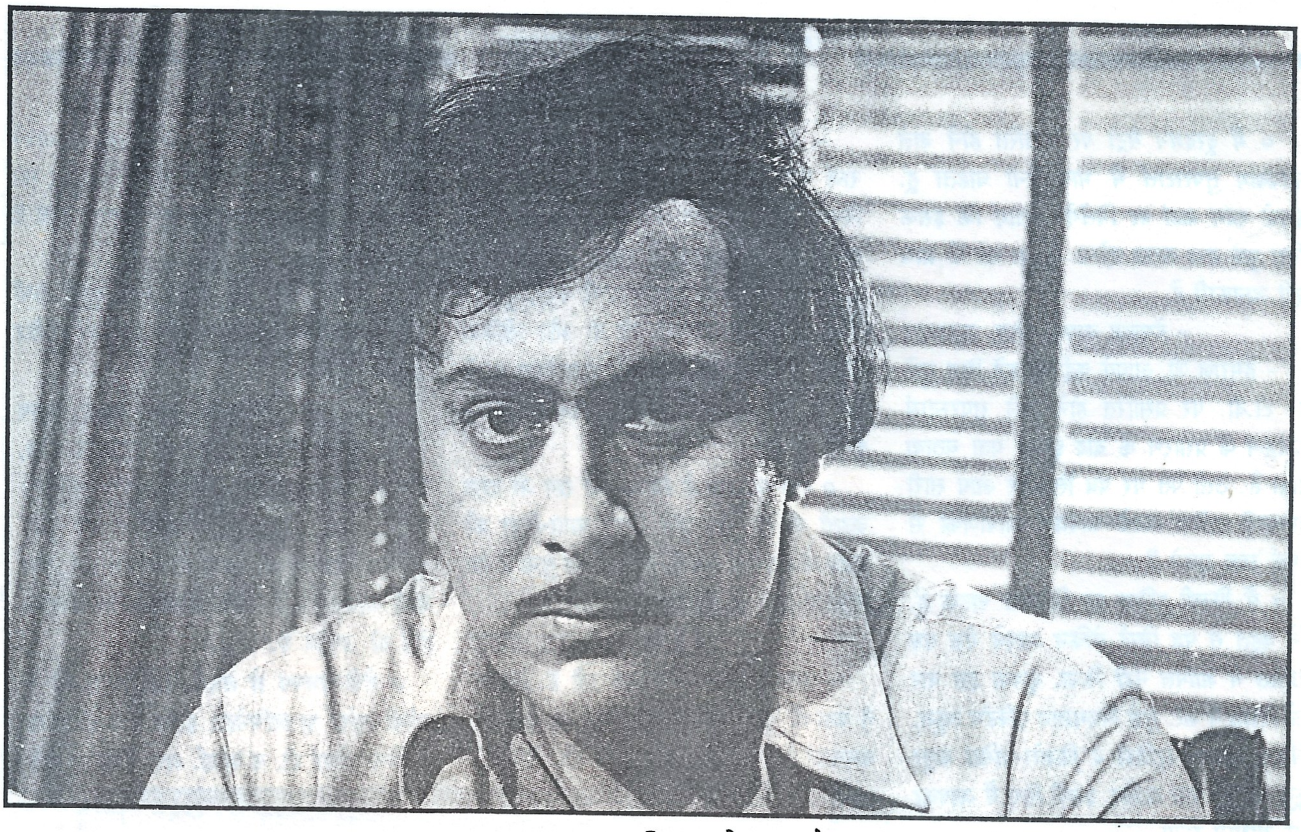
जब अशोक कुमार से गांधी जी ने कहा–पांच रुपए निकालो तो...

जानते हैं बचपन से ही अशोक कुमार को दादा मुनि कहकर क्यों पुकारा जाने लगा था? यह नाम दरअसल अशोक कुमार की छोटी बहन सती ने दिया था जिसका बंगला में अर्थ होता है बड़े भाई का हार. एक दिन दोनों भाई-बहन एक मेले में पहुंचे. तब दादा मुनि ग्यारह साल और बहन सती छः साल की रही होगी. वे खिलौनों की एक दुकान पर खड़े होकर आंखें फाड़-फाड़ कर देखने लगे. फिर अचानक दोनों को न जाने क्या सूझी कि उन्होंने दुकान से एक खिलौना उठाया और वहां से जो भागे तो सीधे घर आकर ही दम लिया. लेकिन इस हरकत के कारण उनके पिता जी ने दोनों की खूब पिटाई की. इन्हीं खिलौना चोर अशोक कुमार उर्फ दादा मुनि के बचपन का एक यादगार क्षण और भी याद आया जब वह पहली बार गांधी जी से मिलने पहुंचे. चूंकि गांधी जी से मिलने जा रहे थे इसलिए उनकी माता जी ने सोचा कि बेटे को खद्दर के कपड़ों में भेजें तो गांधी जी भी प्रभावित होंगे. लिहाजा, नई खादी की शर्ट, हाफ पेंट और सिर पर गांधी टोपी. दादा मुनि उस वक्त अपने को बहुत असहज या कार्टून महसूस कर रहे थे. मगर करते क्या! गांधी जी से मिलना जो था. खैर, झिझकते-झिझकते दादा मुनि किसी तरह गांधी जी के सामने पहुंचे तो गांधी जी ने उनकी दशा भांप कर यह अटपटा परंतु तीखा सा सवाल दाग दिया–आप खादी ही पहनते हैं या खादी भी पहनते हैं? सवाल सुनकर दादा मुनि शर्म से गड़ गए. गांधी जी के सामने बेचारे झूठ भी नहीं बोल सकते थे. उन्होंने सच-सच बोल दिया कि आज पहली बार वह खादी के कपड़े पहनकर उनके सामने उपस्थित हुए हैं. फिर दादा मुनि ने गांधी जी से ऑटोग्राफ देने की फरमाइश की तो गांधी जी ने झट् से कहा–पहले पांच रुपए निकालो तो ऑटोग्राफ दूंगा. जब पांच रुपए दादा मुनि ने दिए तब उन्हें गांधी जी के ऑटोग्राफ प्राप्त हुए. जबकि उन बच्चों को गांधी जी ने फ्री में ऑटोग्राफ दिए जो हमेशा खादी ही पहनते थे.

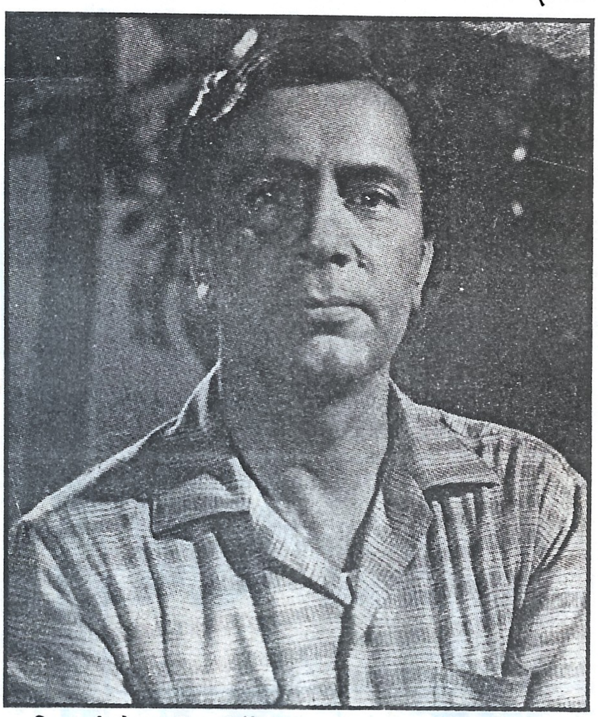
जब डाकुओं की महफिल में साहिर लुधियानवी ने शायरी की

एक बार प्रसिद्ध संगीतकार रवि अपनी कार से दिल्ली जा रहे थे. मध्यप्रदेश के बीहड़ इलाकों में तब भी डाकुओं का बेहद आतंक था. मगर घुमक्कड़ तबीयत के रवि अक्सर अपने परिवार को लेकर गाड़ी से सैर करने निकल ही जाते थे. उस दिन भी वह घूमने के इरादे से दिल्ली की ओर जा रहे थे. रात का समय था. रवि ने देखा, दूर दो आदमी सफेद कपड़ों में खड़े हुए हैं. अंधेरी रात और कार की हेडलाइट में उनके सफेद कपड़े ही दिखाई दे रहे थे. डर के मारे रवि की हालत खराब होने लगी. उनसे कुछ और न करते बना तो गाड़ी की स्पीड ही बढ़ा दी ताकि डाकुओं के संभावित हमले से बच सकें. लेकिन यह क्या! जब गाड़ी नजदीक पहुंची तो रवि को अपनी मूर्खता पर हंसी आ गई. जिन्हें डाकू समझकर उनकी हालत खस्ता होने लगी थी वे दरअसल मील का पत्थर थे जो अंधेरे में आदमी जैसे लग रहे थे. खैर, रवि तो बच गए लेकिन इस घटना के बहुत दिनों बाद मशहूर गीतकार साहिर लुधियानवी का उसी रास्ते पर असली डाकुओं से पाला पड़ गया.

साहिर साहब भी रात में कार से जा रहे थे कि रास्ते में सचमुच डाकुओं से उनका सामना हो गया. साहिर साहब पहले तो घबराए, पर थोड़ी ही देर में डाकुओं की बातचीत से पता चल गया कि वे डाकू तो उनके फैन हैं. वे साहिर साहब को अपने अड्डे पर ले गए. उनकी बड़ी खातिरदारी की. उनसे बड़ी इज्जत से पेश आए. उन्होंने साहिर साहब को बताया कि वे आर्टिस्टों की बहुत कद्र करते आए हैं. अक्सर संगीतकार रवि को जाते देखा है, पर कभी उनको परेशान नहीं किया. इतनी बातें और तारीफें करने के बाद डाकुओं ने साहिर साहब के सामने फरमाइश कर दी–आज तो हम आपको ऐसे न जाने देंगे. हमें शायरी सुनानी ही पड़ेगी आपको. इतनी खातिर और इज्जत पाने के बाद साहिर साहब अपने मेजबानों (डाकुओं) की फरमाइश भला कैसे पूरी न करते. उन्होंने पूरी तन्मयता से डाकुओं को शायरी सुनाई और उनकी वाहवाही भी लूटी. और फिर डाकुओं ने बड़े सम्मान के साथ उस हरदिल अजीज शायर और गीतकार को गाड़ी में बैठाकर विदा किया.



जब बलराज साहनी को कौआ कहने पर परीक्षित साहनी चीख पड़े



फिल्म थी के. आसिफ निर्देशित *हलचल*. इस फिल्म में बाप-बेटे दोनों काम कर रहे थे–बाप यानी बलराज साहनी और उनके बेटे परीक्षित साहनी. तब परीक्षित अजय साहनी के नाम से जाने जाते थे. उनका घरेलू नाम अजय ही था. बाद में जब उनका सितारा गर्दिश में चलता रहा तो एक ज्योतिषी के कहने पर उनका फिल्मी नाम परीक्षित साहनी करा दिया गया. *हलचल* में परीक्षित दिलीप कुमार के बचपन का रोल कर रहे थे. उसमें बलराज जेलर बने थे जो परिस्थितिवश खुद ही जेल में पहुंच जाते हैं. यानी उस सीन में वह कैदी का रोल कर रहे थे. फिल्म की शूटिंग रूपतारा स्टूडियो में चल रही थी. स्टूडियो की जेल में बलराज को कड़ी पुलिस निगरानी में रखा जा रहा था. किसी को उनसे मिलने की अनुमति नहीं थी. जब शूटिंग हो जाती तो उन्हें पुलिस पहरे में जेल की सेल में ले जाया जाता. परीक्षित साहनी उनको दूर से देखा करते और वह उनको देखकर मुस्करा देते. लेकिन उनको देखकर दूसरे लोग उनपर व्यंग्य करते तो परीक्षित को बहुत गुस्सा आता. एक ने बलराज को देखकर कहा–वह देखो, बलराज बिल्कुल कौआ नजर आ रहा है. दरअसल वह दृश्य फिल्म का ही था, लेकिन जूनियर दिलीप कुमार बने परीक्षित साहनी यह समझे कि उनके पिताजी का मजाक उड़ाया जा रहा है. बस, परीक्षित उर्फ जूनियर दिलीप से यह सहन न हो सका. वह जोर-जोर से चीखने-चिल्लाने लगे. उनकी चीख सुनकर बलराज साहनी परेशान हुए. उन्होंने पुलिस वालों से परमीशन मांगी कि उन्हें जूनियर दिलीप कुमार यानी परीक्षित साहनी से मिलने दिया जाए. उनको परमीशन दे दी गई. बलराज जी परीक्षित के पास आए और उनसे चीखने का कारण पूछा तो परीक्षित ने बता दिया. सुनकर बलराज साहनी मुस्कराये और बोले–फिक्र न करो बेटे! सज़ा खत्म होने पर जब मैं बाहर आऊंगा, तो इन मजाक उड़ाने वालों को अपने ही शब्द शर्मिंदगी के साथ चबाने पड़ेंगे.

- अरशद असलम